MAN-ENVIRONMENT RELATIONSHIPS

⇒ मनुष्य तथा पर्यावरण के बीच द्वन्द्वात्मक सम्बन्ध है और दोनो एक-दूसरे से प्रभावित होते हैं तथा साथ ही एक-दूसरे को प्रभावित करते भी हैं।

⇒ मनुष्य तथा पर्यावरण के बीच अंतर्सम्बन्ध समय तथा स्थान के साथ बदलते रहते हैं।

⇒ विश्व के कुछ भागों में मनुष्य पूर्णतया प्रकृति से प्रभावित तो कुछ अन्य भागों में वह प्रकृति को प्रभावित भी करता है। प्राचीन काल में मनुष्य पूर्णतया प्रकृति के नियमों का पालन कर जीवन व्यतीत करता था, परन्तु आधुनिक युग में विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के विकास के बल पर प्रकृति पर विजय पाना शुरु कर दिया है।

⇒ परन्तु प्रकृति भी मनुष्य को नियंत्रित करने का प्रयास करती है।

इस प्रकार मनुष्य तथा प्रकृति बड़े जटिल क्रिया-प्रतिक्रिया के स्थल में बंधे हुए हैं। जिसे स्पष्ट करने के लिए तीन विचारधाराएं पहले से ही प्रचलित हैं —

1. पर्यावरणीय निश्चयवाद (Environmental Determinism)
2. सम्भववाद (Possibilism)
3. नव-निश्चयवाद (Neo-Determinism)

1. पर्यावरणीय निश्चयवाद :

इसे पर्यावरणवाद या नियतिवाद भी कहते हैं।

* इस विचारधारा के अनुसार मनुष्य प्रकृति का दास है। पर्यावरण सर्वशक्तिमान है और मानवीय क्रिया-कलाप को पूर्णतया नियंत्रित करता है।
* प्राकृतिक शक्तियों के सामने मानव तुच्छ, महत्वहीन और निष्क्रिय होता है।

⇒ इस विचारधारा का जन्म जर्मन स्कूल में होता है। किन्तु जिसके प्रणेता रेटजेल हैं।

⇒ रेटजेल के अग्रगामी लोग भी इस विचारधारा का अध्ययन अपने शोध कार्यों में कर चुके हैं। जिसमें प्रमुख हैं — हिप्पोक्रेटस, मांटेस्क्यू, इमैनुअल कांट, एलेक्जेण्डर वान हम्बोल्ट, कार्ल रिटर, चार्ल्स डार्विन एवं हायकल

⇒ रेटजेल के शिष्यों में डेमोलिन, सेम्पुल, हटिंगटन, ट्रेवार्था, हेटनर, ट्रिमोजेन, स्पेट और वाल्बोर्न प्रमुख हैं। जिन्होंने निश्चयवाद की अवधारणा में अपना विश्वास दिखलाया और इसे आगे ले गये।

⇒ विश्व के विभिन्न भागों में अंतर मानवीय व्यवहार और प्राकृतिक दशाओं में अंतर के कारण होता है।

⇒ उदाहरण के रूप में जायरे बेसिन के पिग्मी, कालाहारी मरुस्थल के बुशमैन, टुण्ड्रा क्षेत्रों के एस्किमो तथा मध्य एशिया के किरगिज लोगों का जीवन एक-दूसरे से सर्वथा भिन्न है। साथ ही प्राकृतिक शक्तियों द्वारा पूर्णतः नियंत्रित है।

⇒ इस विचारधारा का प्रचलन इतिहास के प्रारम्भिक काल से चली आ रही है और द्वितीय विश्व युद्ध तक प्रचलित रही।

⇒ रेटजेल डार्विन का अनुयायी था। उसने अपनी पुस्तक एन्थ्रोपोज्योग्राफी में पर्यावरणीय निश्चयवाद के अनेक उदाहरण दिये हैं।

⇒ रेटजेल के अनुसार — "समान दशाएं समान जीवन शैली को जन्म देती हैं।"

⇒ रेटजेल योग्यतम की उत्तरजीविता (Survival of the fittest) में विश्वास करते थे।

⇒ रेटजेल का मत है कि मानव अपने पर्यावरण की उपज है और पर्यावरण की प्राकृतिक शक्तियाँ ही मानव जीवन को ढालती हैं। मनुष्य तो केवल वातावरण की माँग के साथ ठीक समायोजन करता है। और उसके अनुसार अपने को योग्य बनाता है।

⇒ रेटजेल की शिष्या सेम्पुल ने अपनी पुस्तक Influence of Geographic Environment की शुरुआत ही इन पंक्तियों से की है कि— "मनुष्य धरातल की उपज है। इसका अभिप्राय केवल इतना ही नहीं कि वह पृथ्वी की संतान है, उसकी धूल का एक कण है, किन्तु यह भी है कि पृथ्वी ने उसे मातृत्व दिया है, उसका पालन-पोषण किया है। उसके लिए कार्य निश्चित किये हैं। उसके विचारों को दिशा दी है, उसके सामने कठिनाइयाँ उत्पन्न की हैं। जिससे उसके शरीर को बल मिला है और उसकी बुद्धि तेज हुई है। उसे नौ संचालन अथवा सिंचाई की समस्याएं दी हैं और साथ ही साथ इन समस्याओं का हल भी बताया है।"

⇒ इस प्रकार स्पष्ट है कि निश्चयवाद इस बात पर जोर देता है कि मनुष्य प्रकृति के सामने बौना है, जो प्रकृति के नियंत्रण के अधीन है। कोई मानव समुदाय अगर अग्रणी होते निश्चित तौर पर वहां का जलवायु सुखद होता है। जैसे- ब्रिटेन, जापान, अमेरिका। अगर कोई देश पिछड़ा है तो भी उसके लिए वहां की जलवायु जिम्मेदार ही है- जैसे अफ्रीकन देश।

⇒ यहां तक कि मनुष्य का रंग-रूप और भाषा बोली, खान-पान आदि प्रकृति द्वारा निश्चित होती है।

2- सम्भववाद :

इस विचारधारा का मत है कि मानव पर्यावरण का दास नही है अर्थात मानव पर पर्यावरण का नियंत्रण नही है।

⇒ पी॰ हैगेट के अनुसार – निश्चयवाद के विपरीत सम्भववाद भौगोलिक स्थिति के होते हुए भी मनुष्य को व्यवहार के वैकल्पिक प्रारूप का चयन करने की स्वतंत्रता पर बल देता है।"

⇒ सम्भववाद शब्द के जनक लुसियन फेब्रे हैं, और इसके प्रणेता विडाल-डी-ला-ब्लाश हैं।

⇒ यह विचारधारा फ्रांसिसी स्कूल से सम्बन्धित है।

⇒ ब्लाश ने अपनी पुस्तक Principles of Human Geography में बताया कि – "मानव का विकल्प मानव समूह के मानसिक एवं सामाजिक प्रवृत्ति तथा प्रौद्योगिकी के स्तर पर निर्भर करता है।"

⇒ इस प्रकार सम्भववादी विचारधारा इस ऊपर आधारित है कि मनुष्य कोई कठपुतली नही है कि प्रकृति उस पर नियंत्रण कर सके। मनुष्य एक उन्नतशील प्रौद्योगिक मानव है, वो जो चाहता है उसे सम्भव बनाने का प्रयास करता है। यथा - विशाल जलधारा समुद्र को पार करने के लिए जलयान, उड़ने के लिए वायुयान, तेज रफ्तार हेतु मोटरगाड़ी, इंटरनेट की सुविधा, अंतरिक्ष की उड़ान, चांद की यात्रा, बहुमंजिली इमारत, दुर्गम हालातों में रहने की काबिलियत (जैसे - सियाचीन) आदि ऐसे कारनामे हैं, जो मनुष्य की श्रेष्ठता को सिद्ध करते हैं।

⇒ ब्लाश के शिष्य ब्रूंज का मानना है कि मानव अगर प्रकृति की सीमाओं का उल्लंघन नहीं कर सकता तो उसमें परिवर्तन अवश्य कर सकता है।

⇒ उदाहरण के रूप में नदी को पार करना अगर कठिन है तो उस पर पुल का निर्माण कर आवागमन को सम्भव बनाया जा सका है।

⇒ प्रकृति ने मनुष्य के सामने हर पल चुनौतियां प्रदान करती है और सम्भववादी मनुष्य चुनौतियों से बाहर निकलने का मार्ग तलाश ही लेता है।

⇒ समुद्र का जल पीने योग्य न होने के बावजूद मनुष्य ने आसवन विधि द्वारा उसे शुद्ध कर पीने योग्य बनाया है।

⇒ बिना संसाधन के जापान ने अपने तकनीकी के दम पर विकसित राष्ट्र बना है।

⇒ मनुष्य ने अपने ज्ञान के दम पर बाढ़, सूखा, चक्रवात, जैसी प्राकृतिक आपदाओं से निजाद पाने की कला सीख ली है।

⇒ उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि मनुष्य पर प्रकृति का पूर्णतः नियंत्रण नहीं है और न ही मनुष्य पूर्णतया प्रकृति पर विजय प्राप्त कर सका है।

अतः प्रकृति मनुष्य पर या मनुष्य प्रकृति पर हावी नहीं होता।

⇒ ब्लाश के शिष्यों में ब्रूंज, डिमांजिया, ईसा बोमेन, मार्टोनी आदि ने सम्भववाद की विचारधारा को आगे बढ़ाया और मनुष्य की श्रेष्ठता को स्पष्ट किया।

७. नव निश्चयवाद :

इसे सम्भाव्यवाद या आधुनिक निश्चयवाद भी कहते हैं।

* इस अवधारणा के प्रणेता आस्ट्रेलिया के ग्रिफिथ टेलर थे।
* टेलर ने इसे वैज्ञानिक निश्चयवाद भी कहा है।
* इस अवधारणा को समझने के लिए टेलर ने अपनी आस्ट्रेलिया नामक पुस्तक में बताया है कि मनुष्य और प्रकृति का सम्बन्ध एक ट्रैफिक पुलिस और राहगीर जैसा है। अगर रास्ता को बदलना है तो निश्चित तौर पर देखने की जरूरत है अर्थात प्रकृति से संघर्ष करने की आवश्यकता नहीं बल्कि प्रकृति को समझकर आगे बढ़ने में भलाई है। क्योंकि प्रकृति जो चाहती है सो करती है हम बचाव कार्य कर सकते हैं कि नियंत्रण नहीं जैसे — सुनामी, बाढ़, सूखा, भूस्खलन आदि प्राकृतिक आपदायें मनुष्य को हर पल उसके सांस्कृतिक गतिविधि को चुनौती देती हैं। अतः दोनो का अस्तित्व है और ~~दोनों का पर्यावरण~~ ~~प्रकृति~~ मनुष्य को प्रकृति की भावना का कद्र करते हुए समायोजन की स्थिति में रहते हुए विकास करना चाहिए।

⇒ ग्रिफिथ टेलर ने इसे रुको और जाओ नियतिवाद भी कहा है।

⇒ स्पेट, वाम्स और साबा, बेकन आदि विद्वान इस विचार धारा से सहमत हैं और उन्होंने इस अवधारणा को और मजबूती प्रदान की है।

⇒ अतः स्पष्ट है कि मानव और पर्यावरण का अंतर्सम्बन्ध प्राचीनकाल से है आगे भी इस प्रक्रिया को जारी रखना है।

———×———

Dr. M. K. Pandey